

विद्युत दर्पण

पश्चिम क्षेत्रीय विद्युत समिति
गृह पत्रिका

अंक - 24

अप्रैल 2012 - जून 2012

सम्पादकीय

भारतीय शालिवाहन शक वर्ष का पहला दिन, युगाब्द का पहला दिन महाराष्ट्र में गुढी पाडवा के नाम से जाना जाता है। नए वर्ष की शुरुवात अच्छे संकल्प से की जाती है। बीते वर्ष की कटु बातों को भूलकर नये जोश से नये कार्य में जुट जाने का संदेश यह त्यौहार देता है।

कार्यालयीन काम-काज की दृष्टि से देखें तो अप्रैल-जून तिमाही में नया वित्तीय वर्ष भी आरम्भ होता है। नया बजट, नए वर्ष के कार्यों के लिए प्रबंध करने का यह समय होता है। तकनीकी दृष्टि से देखें तो इस अवधि में ऊर्जा की ज्यादा मांग और खपत होती है अतः ऊर्जा बचत और अपव्यय की चिंता भी होती है। तिमाही के समाप्ति के कगार पर बरसात की आहट लगती है। प्रकृति में ऋतुचक्र के अनुसार परिवर्तन होता रहता है, उसी प्रकार हमें अपने जीवन के उतार-चढ़ाव में भी सकारात्मक सोच रखकर आगे बढ़ना है।

मुझे विश्वास है कि विद्युत अधिनियम 2003 के अंतर्गत हम पर जो उत्तरदायित्व सौंपा गया है, उसे निभाने में आप सभी सहयोगियों से संपूर्ण सहकार्य प्राप्त होता रहेगा।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा वर्ष 2009-10 एवं 2010-11 के लिए आयोजित राजभाषा पुरस्कार योजनाओं के लिए हमारे कार्यालय को एवं अधिकारियों को विभिन्न पुरस्कारों से पुरस्कृत किया गया। इस महत्वपूर्ण उपलब्धि के लिए अध्यक्ष, केविप्रा, नई दिल्ली द्वारा बधाई संदेश प्राप्त हुआ है। मैं अपने सभी सहयोगियों का हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ और भविष्य में भी इसी तरह की उपलब्धियों की अपेक्षा करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित।

सु. द. टाकसांडे

सु. द. टाकसांडे
सदस्य सचिव (प्र.)

-सु वि चार-

ए क कोशिश और कर, बैठ न तू हार कर।
तू है पुजारी कर्म का, थोड़ा तो इंतजार कर।।
विश्वास को दृढ बना, संकल्प को कृत बना।
एक कोशिश और कर, बैठ न तू हार कर।।

हार्दिक बधाई

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, उत्तर मुंबई द्वारा आयोजित राजभाषा पुरस्कार योजना वर्ष 2009-10 एवं वर्ष 2010-11 का पुरस्कार वितरण समारोह दिनांक 22 जून 2012 को सम्पन्न हुआ, जिसमें पश्चिम क्षेत्रीय विद्युत समिति को निम्नानुसार पुरस्कार प्रदान किए गए।

वर्ष 2009-10

राजभाषा प्रथम पुरस्कार : कार्यालय को
राजभाषा सम्मान : श्री मनजीत सिंघ, सदस्य सचिव
(तत्कालिन कार्यालय प्रमुख)

वर्ष 2010-11

राजभाषा द्वितीय पुरस्कार : कार्यालय को
राजभाषा सम्मान : श्री एम.एम.धकाते, अधीक्षण अभियंता
(तत्कालिन राजभाषा अधिकारी)
छात्र गौरव : कु. भावेश- सुपुत्र श्री मोहन सावंत,
- एमटीएस

नराकास प्रतियोगिताएं [(12.10.2011) को आयोजित]

सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता : द्वितीय पुरस्कार
श्री ओम प्रकाश सिंह,
अधीक्षण अभियंता
निबंध प्रतियोगिता : प्रथम पुरस्कार
सुश्री तरुप्रभा शैल,
हिन्दी अधिकारी

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, उत्तर मुंबई द्वारा उपरोक्त पुरस्कार वितरण समारोह केन्द्रीय मात्स्यकी प्रशिक्षण संस्थान, मुंबई में आयोजित किया गया था। इस समारोह में श्री सु.द. टाकसांडे, सदस्य सचिव (प्र.), श्री ओ.प्र.सिंह, अधीक्षण अभियंता, श्री लक्ष्मीकांत सिंह राठौर, कार्यपालक अभियंता एवं राजभाषा अधिकारी, श्रीमती तरुप्रभा शैल, हिन्दी अधिकारी ने पुरस्कार ग्रहण किया।

पवन ऊर्जा

-श्री ओम प्रकाश सिंह,
अधीक्षण अभियंता

वर्तमान में ऊर्जा आपूर्ति के विभिन्न स्रोतों में पवन ऊर्जा का महत्व बढ़ता जा रहा है। पवन ऊर्जा बहती वायु से उत्पन्न की गई ऊर्जा को कहते हैं। वायु एक नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत है। पवन ऊर्जा बनाने के लिए हवादार जगहों पर पवन चक्कियों को लगाया जाता है, जिनके द्वारा वायु की गतिज ऊर्जा यांत्रिक ऊर्जा में परिवर्तित हो जाती है। इस यांत्रिक ऊर्जा को जनरेटर की मदद से विद्युत ऊर्जा में परिवर्तित किया जा सकता है। पवन ऊर्जा का आशय वायु की गतिज ऊर्जा को यांत्रिकी अथवा विद्युत ऊर्जा के रूप में परिवर्तित करना है। वायु का चलन धरती की सतह पर असमान तापक्रम होने के कारण होता है।

वायु ऊर्जा साफ-सुथरी है, कार्बन डाईआक्साइड के उत्सर्जन को कम करने के लिए उपलब्ध कुछेक तकनीकी विकल्पों में पवन ऊर्जा भी एक है। इसमें गैसीय प्रदूषकों के उत्सर्जन जैसी कोई समस्या नहीं है जो कि ग्रीन हाउस प्रभाव को उत्पन्न करके पर्यावरणीय समस्याओं को बढ़ाए। यह नवीकरण योग्य ऊर्जा विश्वव्यापी उष्णता तथा अम्लीय वर्षा से संघर्ष कर सकती है।

यह सरलता से प्राप्य है, समाप्त न होने वाली है तथा इसकी आपूर्ति भी निर्बाध है, सूर्य की विकिरित ऊर्जा से धरती के विभिन्न जगहों पर विभिन्न तापक्रम रहता है इससे पवन ऊर्जा सतत रूप से नवीकृत होती रहती है जब कि जिवाश्मीय ईंधन सीमित है और पवन ऊर्जा का दोहन सरलतापूर्वक किया जा सकता है। विश्व की बढ़ती ईंधन की आवश्यकता के लिए पवन ऊर्जा संभावित विकल्प है।

पवन ऊर्जा संयंत्रों का परिचालन सुरक्षित है। आधुनिक व उन्नत माइक्रोप्रोसेसर्स के प्रयोग से पवन ऊर्जा के संयंत्र पूर्णतः स्वचालित हो गये हैं तथा संयंत्र के परिचालन के लिए अधिक श्रमिकों की आवश्यकता नहीं रह गई है। निर्माण तथा रखरखाव की दृष्टि से भी यह पूर्णतः सुरक्षित है। यह बात तापीय ऊर्जा संयंत्रों अथवा नाभकीय ऊर्जा संयंत्रों पर लागू नहीं होती। आधुनिक पवन संयंत्रों में प्रयुक्त प्रभावी सुरक्षा यांत्रिकी से यहाँ तक संभव हो गया है कि इन्हें सार्वजनिक स्थलों पर भी स्थापित किया जा सकता है।

पवन प्रणाली के लिए अधिक स्थान की आवश्यकता नहीं होती है, इसे हर उस स्थान पर, जहाँ वायु की स्थिति अनुकूल हो लगाया जा सकता है। पवन चक्की श्रृंखलाओं में अनेकों अपेक्षाकृत छोटी-छोटी इकाइयाँ होती हैं। इन्हें सरलता व शीघ्रता से समूहों में लगाया जा सकता है। पवन चालित संयंत्र सरल व परिचालन में आसान होते हैं, अतः अन्य विकल्पों की तुलना में इनके रखरखाव की आवश्यकता कम होती है। पवन ऊर्जा का उपयोग किसी अन्य प्रकार की ऊर्जा के साथ साथ किया जाना अधिक लाभप्रद है। पवन ऊर्जा का उपयोग जल विद्युत ऊर्जा जनित्रों के साथ करना अधिक लाभप्रद है क्योंकि जल का उपयोग ऊर्जा भंडारण के स्रोत के रूप में प्रयुक्त किया जा सकता है और जब पवन ऊर्जा की उपलब्धता कम हो तो भंडारित जल ऊर्जा का प्रयोग किया जा सकता है।

पवन ऊर्जा कोयला, गैस चालित तथा नाभकीय - शक्ति से उत्पादित विद्युत को कड़ी चुनौती दे रही है, क्योंकि परम्परागत ऊर्जा स्रोतों के विकास की लगातार जहाँ दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है,

वहीं पवन ऊर्जा की लागत तीव्रता से गिर रही है। वायु चालित टरबाइनों की दिनों-दिन बढ़ती हुई विश्वसनीयता से यह सिद्ध हो रहा है कि निकट भविष्य में अधिक से अधिक क्षेत्र ऊर्जा के अन्य रूपों की अपेक्षा पवन ऊर्जा को सबसे कम व्यय वाले आकर्षक विकल्प के रूप में अपनाएंगे।

दुनिया भर में स्थापित पवन ऊर्जा क्षमता 2011 के अन्त तक 238351 मेगावाट पहुँच गई है। चीन (62733 मेगावाट), संयुक्त राज्य अमेरिका (46919 मेगावाट), जर्मनी (29060 मेगावाट), स्पेन (21674 मेगावाट) और भारत (16084 मेगावाट)। भारत में पवन ऊर्जा का विकास 1990 के दशक में शुरू हुआ और पिछले कुछ वर्षों में इसमें काफी तेजी से वृद्धि हुई है। भारत में पवन ऊर्जा की स्थापित क्षमता (16084 मेगावाट) है। पवन ऊर्जा की इस स्थापित क्षमता के साथ भारत विश्व का पांचवा सबसे बड़ा पवन बिजली उत्पादक देश है। नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय (MNRE) ने वर्ष 2007-12 में 10500 मेगावाट पवन ऊर्जा की स्थापना का लक्ष्य निर्धारित किया है, ऐसा संशोधित अनुमान है कि 6000 मेगावाट की अतिरिक्त पवन ऊर्जा को वर्ष 2012 तक भारत में स्थापित किया जाएगा। भारत में स्थापित कुल ऊर्जा क्षमता में 6% पवन ऊर्जा की स्थापित क्षमता है और देश की उत्पादित ऊर्जा का 1% इससे उत्पन्न होता है। भारत पवन ऊर्जा के त्वरित विकास के लिए पवन एटलस तैयार कर रहा है।

समाचार दर्पण

बिदाई

- ❖ सुश्री शुभांगी कोल्हे, उच्च श्रेणी लिपिक का क्षेत्रीय निरीक्षण संगठन (आर आई ओ) मुंबई में स्थानांतरण के परिणामस्वरूप उन्हें दिनांक 20 जून 2012 को पक्षेविसमिति मुंबई से कार्यमुक्त किया गया।

नैनन छिन्दति शस्त्राणी -----।

- ❖ श्री सु.द. टाकसांडे, सदस्य सचिव (प्र.) के पिताजी का दिनांक 29 मई 2012 को निधन हुआ। पक्षेविसमिति परिवार उनके निधन पर सम्वेदना प्रकट करता है।
- ❖ श्रीमती नदिनी उन्नीकृष्णन्, उ.श्रे.लिपिक के पति का दिनांक 2 मई 2012 को आकस्मिक निधन हुआ। पक्षेविसमिति परिवार उनके दुःख में शामिल है।

राजभाषा समाचार

- ❖ राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 98 वीं बैठक दिनांक 27.04.2012 को श्री सु.द. टाकसांडे, सदस्य सचिव (प्र.) की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। जिसमें राजभाषा नीति अनुपालन से संबंधित सभी मदों पर चर्चा हुई।
- ❖ दिनांक 5 जून 2012 को आयोजित हिन्दी कार्यशाला में 'छठा वेतन आयोग - वेतन वृद्धि निर्धारण' विषय पर श्रीमति नदिनी उन्नीकृष्णन् अश्रेलि ने व्याख्यान दिया। 1 अधिकारी एवं 7 कर्मचारियों ने इस व्याख्यान का लाभ लिया।
- ❖ नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, उत्तर मुंबई की 23 वीं बैठक दिनांक 22 जून 2012 को सम्पन्न हुई। बैठक में श्री सु.द. टाकसांडे, सदस्य सचिव (प्र.) एवं श्रीमती तरुप्रभा शैल, हिन्दी अधिकारी ने भाग लिया।
